मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

किस्सा शून्य की खोज का

बाल नरेन्द्र ने एक बार महान गणितज्ञ आर्यभट्ट से उन संघियों की गिनती करने को कहा जिनका स्वतन्त्रता संग्राम या देशभक्ति में लेशमात्र भी योगदान रहा हो और बस वहीं से आर्यभट्ट ने शून्य की खोज की।

चंदा कोचर को अभयदान 3
भारत माता का अपमान 4
अटाली में ईद 5
सड़क छाप जुमला 8

वर्ष 31 अंक -26 फ़रीदाबाद 24-30 जून 2018 फोन : - 9999595632 ₹ 2

शहर में पानी युद्ध, शासकों प्रशासकों का हमला; मकसद आज भी है लूटना

फ़रीदाबाद (म.मो.) भीषण गर्मी में शायद ही कोई ऐसा दिन जा रहा हो जब शहरवासी पानी के लिये प्रदर्शन, घेराव आदि न कर रहे हों। बड़खल झील को लबालब भर देने की बात करने वाली विधायक सीमा त्रिखा घर आये प्रदर्शनकारियों से आंख मिलाने का भी साहस नहीं कर पा रही हैं। वे बीमारी का बहाना कर घर में ही छिपी रह कर पुलिस द्वारा प्यासी जनता को भगाती हैं।

पानी का यह संकट आज कोई यकायक नहीं उठ खड़ा हुआ है। गत तीसियों बरस से संकट बना हुआ है जो गर्मियों के 3-4 महीने में काफ़ी उग्र हो जाता है। इस संकट से निपटने के लिये बीते इन्हीं बरसों में हज़ारों करोड़ रुपये खर्च किये जा चुके हैं। करीब 25 वर्ष पूर्व कहा गया था कि रैनीवैल योजना से इतना पानी मिलेगा कि जल संकट नाम की कोई चीज़ ही नहीं रहेगी। हज़ारों करोड़ उस योजना पर बर्बाद करने के बावजूद आज भी स्थिति ज्यों की त्यों है।

दरअसल मौलिक रूप से रैनीवैल योजना ही ग़लत थी। यमुना बैड में जितने भू जल भंडार का आंकलन किया गया था उतना जल भंडार वहां है ही नहीं। बल्कि इस योजना के चलते क्षेत्र के गांवों में खेती किसानी के लिये चलने वाले ट्यूबवैलों का चलना भी दूभर हो गया। हर साल भूजल स्तर गहरे से गहरा होता जा रहा है।

रैनीवैल योजना में लगे 30 ट्यूबवैलों में से 12 तो खराब हुए पड़े हैं और जो चल भी रहे हैं वे पानी की जगह रेत उगल रहे हैं। इस रेत के चलते ये ट्यूबवैल भी खराब होने वाले हैं क्योंकि खराब हो चुके 12 ट्यूबवैलों की खराबी का कारण भी यही रेत रहा है। इतना सब होने के बावजूद अभी भी प्रशासन की सारी उम्मीदें इसी रैनीवैल से जुड़ी हैं। उन्हें और कोई विकल्प सूझता ही नहीं।

रैनीवैल के अलावा शहर में सैंकड़ों की संख्या में ट्यूबवैल लगाये गये हैं। अफ़सरशाहों को केवल ट्यूबवैल लगाने से मतलब रहता है, उससे पानी निकले या न निकले। क्योंकि ट्यूबवैल लगाने की पेंमेंट ठेकेदार को मिलेगी तभी तो वह मोटा कमीशन अफ़सरों व राजनेताओं को देगा। अभी हाल-फ़िलहाल 50 ट्यूबवैल लगाने के लिये 300 करोड़ रुपये स्वीकृत किये गये थे। यानी 6 करोड़ प्रति ट्यूबवैल। जानकार बताते हैं कि यह योजना केवल मोटा पैसा डकारने के लिये बनाई गयी थी। जिस तरह से और जहां इन ट्यूबवैलों को लगाया जाना था वहां से पानी निकलना ही नहीं था। इस कवायद से जहां मोटा पैसा हजम किया जाना था वहीं जनता को दिखाया जाना था कि सरकार कितनी गंभीर है पानी की समस्या को लेकर। ये ही 50 ट्यूबवैल नहीं शहर में जितने भी ट्यूबवैल लगे हैं उनमें से अधिकांश खानापूर्ति के लिये हैं। इनके रख-रखाव पर भी अंधा-धुंध पैसा खर्च दिखाया जाता है।

एक महत्वपूर्ण तथ्य

करीब 21 वर्ष पूर्व तत्कालीन उपायुक्त स्वर्गीय बीके पाणीगृहि को भूजल बोर्ड के तत्कालीन चेयरमैन डीके चड्ढा ने अनौपचारिक बातचीत के दौरान बताया था कि हज़ारों करोड़ की जिस रैनीवैल परियोजना से भरपूर पानी की उम्मीद की जा रही है, वहां इतना भूजल है ही नहीं। कुछ दिन चलने के बाद गहरे ट्यूबवैल भी सूखने तय हैं। तत्कालीन उपायुक्त ने यह तथ्य सरकार को बताया या नहीं यह तो मालूम नहीं परन्तु 'मज़दूर मोर्चा' ने इसे अवश्य प्रकाशित किया था। परन्तु नक्कारखाने में तूती की कौन सुनता है ? फ़िर जहां हज़ारों करोड़ की बंदरबांट होनी हो तो वैसे भी सुनने की जरूरत कहां रह जाती है।

अरावली की पहाड़ियां एक अच्छा जल स्रोत हो सकती हैं

इन पहाड़ियों में दर्जनों गहरी झीलें हैं जो कुदरती शुद्ध पानी से लबालब हैं। इनके अलावा छोटे-छोटे चैक-डैम (बांध) बनाकर सारे बरसाती पानी को इन्हीं पहाड़ियों में रोक कर और भी बड़ी झीलों का रूप दिया जा सकता है। अभी तक जो सारा वर्षा का जल बह कर नालों में चला जाता है वह बतौर पेय जल इस्तेमाल हो सकता है।

रैनीवैल यानी यमुना किनारे से पाइपों द्वारा पानी लाने की अपेक्षा इन पहाड़ियों से पानी को लाना बेहद सस्ता भी पड़ेगा और कभी समाप्त भी नहीं होगा।

बड़खल झील को लबालब भरने की बातें करने वाले कभी इसे ट्यूबवैलों से तो कभी सीवर के शोधित पानी से भरने की बातें करते हैं। वे लोग यह नहीं समझने का प्रयास करते कि जो झील सदैव पानी से भरी रहती थी, बल्कि बरसात में उसका पानी निकालना पड़ता था, यकायक क्यों सूख गयी ? कारण बड़ा स्पष्ट है, बरसात का जो पानी बहकर इस में आता था वह खनन द्वारा बह कर बुढिया नाले या अन्यत्र इधर-उधर जाने लगा। उसी पानी को इस झील तक लाने के लिये कुछ चैक डैम बना कर पानी के बहाव को झील की ओर मोड़ना है। परन्तु तमाम शासक व प्रशासक बातों के पकौड़े तो तल सकते हैं लेकिन काम कोई नहीं करना चाहते। काम तो केवल वहीं किया जाता है जिससे लूट कमाई भरपूर हो सके।

शहर में गिरते भूजल स्तर को देखते हुये सरकार ने नागरिकों द्वारा ट्यूबवैल लगाने पर तो पावंदी लगा दी जबकि इस के लिये खुद सरकार ही उत्तरदायी है। किसी जमाने में नगर निगम क्षेत्र में 150 से अधिक छोटे-बड़े तालाब होते थे। इनमें बरसाती पानी बहकर आता था। इससे एक तो सड़कों पर जलभराव नहीं होता था, दूसरे भूजल स्तर भी बना रहता था। इसके अलावा पशुओं के नहाने पीने का भी स्रोत यही तालाब होते थे। शहरीकरण के साथ-साथ भ्रष्ट एवं जनता के दुश्मन राजनेताओं व अफ़सरों ने पहले तो इन तालाबों को सीवेज व अन्य कचड़े से भर कर खूब सड़ाया फ़िर धीरे-धीरे कब्जे करा कर बेच खाया।

जहां तक सवाल है ट्यूबवैल लगाने पर पाबंदी का तो वह पुलिस की लूट कमाई का एक अच्छा साधन बन गयी है। स्थानीय पुलिस से सेटिंग करके अब भी ट्यूबवैल लग रहे हैं। हां पाबंदी से पहले जो काम 5 लाख में होता था अब 7 लाख में हो जाता है।

भूजल स्तर को बढाने के नाम पर नये बनने वाले घरों में बरसाती पानी का हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाना जरूरी है। इसका वास्तव में कोई लाभ नहीं हो सकता। हां इसके एवज में भवन निरीक्षण करने वाला अधिकारी जरूर दस-बीस हज़ार ले मरता है। घरों की बजाय सड़कों पर बह कर जो बरसाती पानी गंदे नालों में जा रहा है उसे नियन्त्रित करने पर सरकार का कोई ध्यान नहीं। हां दिखावे के लिये शहर के अनेकों पार्कों में करोड़ों की लागत से ये सिस्टम लगाये तो गये हैं लेकिन इस ढंग से कि पानी की एक बूंद भी इनमें न जा पाये। दरअसल इनको लगवाने वाले अफ़सरों का उद्देश्य रेन वाटर हार्वेस्टिंग न होकर केवल अपना कमीशन खरा करना था।

जिस दिन ये हरामखोर व रिश्वतखोर राजनेता व अफ़सर हरामखोरी व रिश्वतखोरी छोड़ कर सही नीयत से जल समस्या हल करने पर उतर आयेंगे उस दिन यह समस्या ढूंढे से भी नहीं मिलेगी।

ईद अटाली गांव में भी हुई

हाजी अली : बुरा सपना

फ़रीदाबाद (म.मो.ब्यूरो) करीब 3 वर्ष पूर्व अटाली गांव में अल्पसंख्यक मुसलमानों के जान-माल को खतरा बना हुआ था। मुसलमान गांव छोड़-छोड़ कर भाग रहे थे, उनके घरों में आग लगाई जा रही थी। लेकिन आज वहां काफी कुछ सामान्य है। पुराना भाईचारा, पुराना मेल-जोल, पहले जैसा।

यह सब पाया 'मज़दूर मोर्चा' की विशेष टीम ने 17 जून को जब वहां की वास्तविक स्थिति जानने के लिये गांव का दौरा किया। गांव की बाहरी सड़क पर लगी दुकानों में से एक प्रमोद जाटव की है जो अंडों के साथ चाय आदि बेचने का काम करते हैं। बात-चीत में उनहोंने बताया कि दो दिन पहले यहां ईद मनाई गयी जिसमें हिन्दुओं ने भी अपने मुस्लिम भाईयों को बधाई दी ओर एक दूसरे के गले मिल कर ईद मुबारक की। प्रमोद ने बताया कि इस गांव में हिन्दू-मुस्लिम का भाईचारा कदीमी यानी बहुत ही पुराना चला आ रहा है।

करीब 3 वर्ष पुराने झगड़े के बारे में एक अन्य युवक का कहना था कि वह तो कुछ असामाजिक राजनीतिक तत्वों की गंदी राजनीति का परिणाम था। पंचायत के चुनाव सिर पर थे, मुसलमानों के वोट लगभग एक ही जगह बंध कर जाते हैं। जिस पक्ष को ये वोट नहीं मिलने थे जाहिर है उसे तो ये लोग दुश्मन ही नज़र आने थे, लिहाज़ा उसने कुछ लफ़ंटरों के द्वारा साजिश रच कर सारा माहौल बिगाड़ दिया था।

सामने की एक लोहे की दुकान पर बैठे दो अन्य लोग़ों से एक बिजली विभाग में फ़ोरमैन मिले। इन लोग़ों ने भी लगभग यही बातें दोहराते हुये कहा कि 'वह एक बुरा सपने जैसा था', अब सब कुछ सामान्य है। मुसलमानों द्वारा जो फ़ौजदारी केस पुलिस में दर्ज कराये गये थे, यद्यपि वे वापस नहीं हुये हैं। उसके बावजूद गांव में कोई तनाव नहीं है। पुलिस में दर्ज मुकदमे कोई झूठे तो हैं नहीं। जिसने आग लगाई उसके खिलाफ़ आगज़नी, जिसने मार-पीट व तोड़-फ़ोड़ की उसके खिलाफ़ उसी जुर्म के मुकदमे दर्ज हैं। इस तरह के मुकदमे एक ही समाज अथवा जाति में भी लोग एक दूसरे के खिलाफ़ दर्ज कराते रहते हैं।

(विशेष रिपोर्ट देखें पेज 5 पर)

शर्मनाक

दिल के रोगी श्रमिक को ईएसआई अस्पताल ने भगाया

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्थानीय आकाश पैकटैक प्राईवेट लिमिटेड सेक्टर 69 का श्रमिक 38 वर्षीय दीपक मिश्रा दसियों वर्ष से अपने वेतन का साढे 6 प्रतिशत ईएसआई निगम को देता आ रहा है। लेकिन 14 जून को जब उसे दिल का दौरा पड़ा तो ईएसआई मेडिकल कॉलेज वालों ने उसे ओपीडी में जाने को कहा। तुर्त-फुर्त वह बीके अस्पताल गया जहां उसका ईसीजी व अन्य जांच करने पर पाया गया कि उसे दिल का दौरा पड़ा हुआ है। डॉक्टरों ने उसे आईसीयू में भर्ती करके इलाज शुरू कर दिया। तुरंत एनजीयोग्राफ़ी एवं एनजीयोप्लास्टी कर दी गयी। इसके लिये दीपक को 55000 का नकद भुगतान करना पड़ा। लानत है ऐसे ईएसआई निगम व उसके अस्पतालों पर।

दीपक के परिजनों ने **'मज़दूर मोर्चा'** को बताया कि 14 जून को जब रात की ड्यूटी करके दीपक करीब 7 बजे घर पहुंचा तो उसे बांये कंधे व पूरे हाथ में तेज़ दर्द

शेष पेज दो पर

सीएम सिटी में 'जामुन का पेड़'

अन्दर पेज 7 पर मशहूर कथाकार स्वर्गीय कृष्ण चंदर की कहानी 'जामुन का पेड़' पढ़िए तो हमारे देश में नौकरशाही की चाल का अंदाजा लग जाएगा। इस चाल से सीएम सिटी करनाल के लोग इस कदर बेहाल हैं कि यदि कृष्ण चंदर आज यह कहानी लिखते तो इसका शीर्षक होता- 'खट्टर ने मारी रेड़'।

यहाँ तक कि शहर की जिस मुख्य सड़क (एनडीआरआई से आईटीआई बाई पास तक) पर मुख्यमंत्री का मार्फत ओएसडी अपना कार्यालय है, उसके दोनों ओर के सारे पेड़ महीनों से उखाड़ दिए गए हैं और सारी सड़क के किनारे लम्बाई में गहरी खुदाई कर दी गयी है। वन विभाग के नियमानुसार बदले में दस गुणा पेड़ आस-पास लगाने चाहिए थे पर ये नियम भी खट्टर की कुंद पड़ी नौकरशाही की खाल में चिकोटी नहीं भर सके हैं। शायद, इंतजार है कब बरसात आये और बड़े हादसे हों।

बाकी शहर की सड़कों का तो कहना ही क्या, सबसे विशिष्ट मानी जाने वाली माल रोड को डीप सीवर डालने के नाम पर चार माह से खोदकर ठेकेदारों के रहमो करम पर छोड़ दिया गया है। इस सड़क पर डीसी, एसपी और कमिश्नर समेत सारी टॉप नौकरशाही रहती है। इससे होकर स्वयं खट्टर भी महीने में कम से कम चार बार गुजरते ही हैं। इसे शायद 'विकास' के खट्टर मॉडल का शो केस बना कर इसी रूप में सुरक्षित रखने की लम्बी योजना है।

कल्पना चावला मेडिकल कॉलेज समेत सारे शहर में जो काम जहाँ तक पहुंचा है, आगे रेंगने को मजबूर है। सीएम विंडो ही जब राह नहीं देती, फिर बाकी अधिकारी क्या खाक सुनेंगे आम जन की फरियाद को। शाबाश खट्टर, शाबाश तेरी नौकरशाही!